www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसी पराधीनता किस काम की

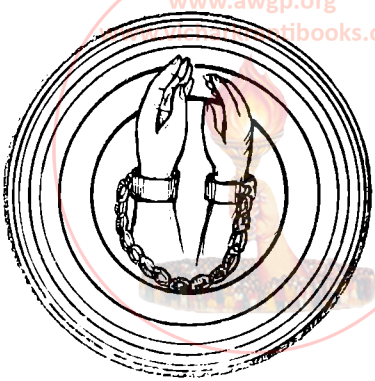

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसी पराधीनता किस काम की ?

पराधीनता को पाश कहा गया है। जीव की प्रकृति बंधन में बँधने की नहीं है। बलात् जकड़े हुये बन्धन तो बन्दी गृह की तरह नितान्त कष्ट दायक ही होते हैं और उस प्रकार का बाधित एक--एक क्षण वर्ष के समान भारी पड़ती है। जेलखानों में बहुत करके सुविधा और निश्चिन्तता ही रहती है, कइयों को तो घर की अपेक्षा भोजन, वस्त्र घर से भी अच्छे मिलते हैं तो भी कोई जेल जाना पसन्द नहीं करता। उन्मुक्त विचरण करने वाले पशु--पक्षियों में पिंजड़े अथवा रस्से से जकड़े रहने वालों की अपेक्षा कितनी चेतना होती है इसे प्रत्यक्ष देखा जा सकता है, भव--बन्धनों से मुक्त होने को परम पुरुषार्थ माना गया है। जीव मुक्ति के लिये लालायित रहता है क्योंकि समस्त दुःखों का कारण बन्धन और समस्त सुखों का केन्द्रबिन्दु स्वातन्त्र्य है। राज--नैतिक स्वाधीनता के विश्व-व्यापी संघर्ष के इतिहास के देखने से यही पता चलता है कि देशों समाज और जातियों ने अपनी खोई स्वतन्त्रता प्राप्त करने एवं उपलब्ध को अक्षुण्य बनाये रहने के लिये बड़े से बड़े कष्ट सहे और त्याग बलिदान प्रस्तुत किये हैं। दास और दासी प्रथा का अब लगभग अन्त होने को है जहाँ इस प्रकार के बन्धन हैं वहाँ संघर्ष हो रहे हैं और सम्भावना बढ़ रही है कि राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, पराधीनता के बन्धन दिन--दिन शिथिल होते चले जायेंगे और एक समय आवेगा कि वे पूर्णतया टूट कर रहेंगे।

बन्धन एक ही सह्य हो सकता है और वही प्रिय लग सकता है वह है प्रेम का बन्धन। परस्पर स्नेह सौहार्द्र में बँधे हुये एक दूसरे की सद्भावना और सज्जनता से प्रभावित व्यक्ति स्वेच्छा पूर्वक मैत्री बन्धनों में बँध जाते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और एक दूसरे की कमियों और भूलों को सहिष्णुता एवं उदारता के साथ निबाहते हुए लम्बा जीवन निकाल देते हैं। क्षति, असुविधा और कठिनाई सह कर भी यह क्रम चलता रहता है। परस्पर सेवा सहायता करते हुए जिस पक्ष को हानि उठानी पड़ती है वह सन्तोष एवं गर्व अनुभव करता है और जो लाभ में रहता है उसकी आँखें नीची बनी रहती हैं। यह सब प्रेम का चमत्कार है।

विवेक के आधार पर संयम और मर्यादाओं के बन्धन भी प्रेम की तरह ही औचित्य के आधार पर व्यक्ति स्वयं बनाता है। सब निर्धारित दिनचर्या लोग प्रसन्नता पूर्वक निभाते हैं, इसी प्रकार संयम और नियम की आचार संहिता तो आदर्शवादिता एवं लोक मंगल पर निर्धारित ही प्रिय लगती है और सन्तोष प्रद तथा सराहनीय भी। किन्तु यदि प्रवंचना पूर्वक किसी भोले को बहकाकर जाल जंजाल में बाँध दिया जाय और उसकी प्रतिभा का विकास अवरुद्ध कर दिया जाय तो कबूतर के पर 'कैंच' कर देने की तरह प्रत्यक्ष रूप से कुछ पता न चलने पर भी वस्तुतः यह एक अन्याय ही होगा और ऐसी बन्धन बाधिता को भी निन्दनीय ही माना जाना चाहिये।

पिछले दिनों से यह छद्म प्रयास होते रहे हैं कि नारी को पशुओं की तरह बंधनों में ही आवद्ध रखा जाय और उसकी परिधि घर की चहार दीवारी तक सीमित कर दी जाय तथा उसकी समस्त प्रतिभा का उपयोग भोजन पकाने तथा बच्चे पैदा करने से आगे न बढ़ने दिया जाय। पिछले सामन्ती युग में यह बन्धन बहुत ही जघन्य थे। चप्पों बनिताओं की तरह बहुत-बहुत औरतें भी लोग रखते थे। पटरानी, रानी, रखैल, दासी, वेश्या आदि उनकी अनेक श्रेणियाँ होती थीं। आर्थिक, शारीरिक और सेवात्मक सुविधा के अनुसार इस प्रकार का उपयोग कोई जितने ही बड़े परिमाण में कर सकता था और अपने जाल में फँसी हुई नारियों के साथ नृशंसतम व्यवहार कर सकता था। सामन्त युग की इन उत्पीड़न भरी करुण कथाओं का रोमान्चकारी इतिहास है। समर्थ सामन्तों का प्रभाव साधारण जनता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर भी पड़ा। वे बहु विवाह करने में तो समर्थ न थे पर पर्दा, घूंघट की कठोरता को अपनाने और घर की बहू-बेटियों को बाधित करने में उनने भी कोई कसर नहीं रखी। शिक्षा और स्वावलम्बन के लिये प्रगति और व्यक्तित्व निर्माण के लिये उन्हें किसी भी द्वार से आगे बढ़ने की गुन्जायश नहीं छोड़ी गई। वह क्रम अब तक चला आ रहा है। जहाँ जितना ज्यादा पिछड़ापन है वहाँ नारी के प्रति उतने ही अनुदार बंधन कड़े हैं। इस सन्दर्भ में शिक्षित और अशिक्षितों में कहने भर का अन्तर है। तथाकथित सभ्य लोगों की स्त्रियों को घूंघट भले ही न मारना पड़ता हो पर जहाँ स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास के लिये कुछ कदम आगे बढ़ाने की बात आती है वहाँ अधिकतर रूढ़िवादी लोग लिखित अलिखित का अन्तर मिटाकर एक ही स्तर पर खड़े दीखते हैं। उदारता, समानता, और मानवीय स्वतन्त्रता का सम्मान जिन परिवारों में मिल सके ऐसे कम से कम अपने देश में तो बहुत ही स्वल्प मात्रा में मिलेंगे। नारी के हाथ पैरों में रस्से, जंजीर बाँधकर न सही—घुमा फिरा कर लगभग रखा उसी स्थिति में जा रहा है। शील की रक्षा का उपहासास्पद आवरण डालकर इस परिपाटी का समर्थन कतना उपहासास्पद है उसकी पोल इतने मात्र तर्क से खुल जाती है कि यदि बन्धन ही शील रक्षा का उपाय है तो उसे पुरुषों पर भी लागू क्यों न किया जाय ?

हँसी तब आती है जब तथाकथित स्वतन्त्रता के साथ-साथ नये किस्म के बन्धन भी गढ़े और जकड़े जाने की प्रक्रिया कितनी खूबी और खूबसूरती के साथ सामने आती है। पाश्चात्य देशों में नारी पर से सामाजिक बन्धन लगभग उठ से गये है। उसे नर की बराबर ही नागरिक अधिकार प्राप्त हैं। भारत जैसी बाधित स्थिति में उन्हें नहीं रहना पड़ता। वह लहर भारत में भी आई है। नारी पर से सामन्ती बन्धन हट गये हैं और वह घूँघट निकालने घर से बाहर न निकलने, किसी से बात न करने के लिये बाधित नहीं की जाती। इस स्वतन्त्रता से सहज ही यह आशा बँधती थी कि अब नारी को अपनी प्रतिभा को अपने व्यक्तित्व की सर्वाङ्गीण सम्भावनाओं को विकसित करने का अवसर मिलेगा और वह समाज के लिये पुरुषों की तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही योगदान कर सकने में समर्थ होगी। पर कितने खेद की बात है कि अंकुर उगते ही खेत पर पाला पड़ने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

तथाकथित सभ्य समाज की नारी अब इसी जाल जंजाल में जकड़ती चली जा रही है उसे पता भी नहीं चल पा रहा है कि हाथी को पकड़ने वाले चतुर शिकारी अब सामन्ती अनाचार बन्द हो जाने पर उसे जकड़ने के लिये मनोवैज्ञानिक जाल ऐसे बुन रहे हैं जो पिछले वालों को भी मात दे सकें। सामन्त युग में नारी को बाधित किया जाता था और वह उस बन्धन से खिन्न होती थी विचारशील लोग भी उस प्रथा को अमानवीय बताते थे। अब नये जाल मजबूत और आकर्षक पहले वालों से अधिक सफल सिद्ध हो रहे है। बन्धा बांधे बाँधे भी नहीं --निन्दा विरोध की आशंका भी नहीं रही और प्रयोजन पहले से भी अच्छा सिद्ध हो गया। भोली नारी उस बहकावे में आटे की गोली देखकर ललचाने वाली मछली की तरह अपनी प्रतिभा नष्ट करने के लिये स्वयं ही बढ़ती चली आई। इसे कहते है —मनोवैज्ञानिक कमाल !

पत्र-पत्रिकाऐं, तस्वीरें, सिनेमा, उपन्यास, विज्ञापन आदि सभी ओर से ऐसा मनोवैज्ञानिक वातावरण बनाया जा रहा है जिससे नारी अपने व्यक्तित्व की सार्थकता अधिक आकर्षक सुसज्जित मांसल व मुखर होने में समझे जिसका वेष विन्यास शृङ्गार सज--धज हाव- भाव जितने अधिक आकर्षक उच्छृंखल होंगे उतनी ही वह सराही जायगी यह बात अब उसके मन में प्रस्तुत वातावरण ने गहराई तक बिठा दी है।

अपने देश में अभी शृङ्गार, फैशन, सज--धज, वेष व विन्यास की ही दौड़ चल रही है। पश्चिमी देश इससे बहुत आगे निकल गये। वहाँ आकर्षक बनने की परिभाषा उस सीमा तक चली गई है जिसमें नर-नारी का स्वच्छन्द मिलन, अश्लील हाव-भाव एवं सङ्कोच की सारी मर्यादाऐं हटाकर होने वाला हास परिहास भी शामिल है। वहाँ अब यह नारी का एक आदर्श का गुण माना जाने लगा है —इस अश्लीलता की विधिवत् शिक्षा देने के लिये कितने ही शिक्षण केन्द्र चलते हैं। पहाड़ जितना साहित्य छपता है। माता--पिता स्वयं यत्न प्रयत्न करते हैं कि उनकी सयानी लड़कियां उस प्रशिक्षण में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पारङ्गत हो सकें अन्यथा वे आकर्षक न रह जायँगी और उन्हें दाम्पत्य सुख न मिल सकेगा। आर्थिक सुविधा न मिलेगी और 'सामाजिक' न कहला सकेंगी नर को आकर्षित करना ही इस सारी साज सज्जा, श्रृंगारिकता और निर्लज्जता का एकमात्र कारण है अन्यथा नारी पर ही ऐसी क्या मुसीबत आई है जो इस तरह सज--धज बनाने में अपने मूल्यवान समय, धन और कौशल की बर्बादी करे। कोई आकर्षित न हो तो यह सज-धज व्यर्थ है। वह काम कौतुक निरर्थक हैं जिसे चरितार्थ करने पर वे सामाजिक कहला सकती हैं।

यह प्रक्रिया प्रकारान्तर से व्यभिचार की पूर्व भूमिका है। जान या अनजाव में जहाँ भी ऐसा प्रयास चल रहा हो समझना चाहिये उसमें वैर सवेर में शील संकट पैदा होकर रहेगा। सादी और सौम्य वेष-भूषा में नारी का व्यक्तित्व दबता नहीं बिखरता है। उसकी शालीनता अपना प्रभाव बढ़ाती ही है और सबसे बड़ी बात यह है वह उस प्रदर्शन के साथ जुड़ी हुई बर्बादी से अपनी शक्तियों को सुरक्षित रखकर उन कामों में लगा सकती हैं जिनसे उसकी शारीरिक, मानसिक पारिवारिक, सामाजिक प्रगति में सहायता मिले और शील सदाचार का संरक्षण अधिक सुनिश्चित रह सके। आकर्षक वेष विन्यास उन लोगों को अनायास ही आकर्षित करता है जिनका सम्पर्क भावुक प्रकृति की नारियों के लिये खतरे से खाली नहीं समझा जाना चाहिए।

भोली नारी इस फूहड़ सज--धज, बचकानी वेष भूषा और निर्लज्ज भाव भंगिमा के जाल में फंसकर बेमौत मरने के लिए स्वयं तैयार नहीं हो रही हैं। उसने अपनी शालीनता को स्वेच्छा पूर्वक बहिष्कृत करने की बात स्वीकार नहीं की है। यह उससे कराया गया है। मनोवैज्ञानिक वातावरण ऐसा ही बनाया जा रहा है जिसके जाल में फँसने के अतिरिक्त उस भोली हिरणी के पास और कोई रास्ता ही न रह जाय। वधिकों की एक पूरी बिरादरी संगठित हो गई है। वह रंग-बिरंगे पिंजड़े बुनने और तरह--तरह के चारे दाने डालने में अपने कला-कौशल का अन्त कर रही है। एक आदर्श नारी वही हो सकती है जो आकर्षक हो। इस तथ्य को आप सिनेमा के हर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्दे पर, बाजार में बिकने वाली हर तस्वीर पर, हर कथा पुस्तक और पत्रिका पर अंकित देख सकते हैं। मांसलता का उभार, आकर्षक विन्यास, अश्लील अभिव्यंजना का जहाँ जितना गहरा पुट होगा वहीं लोगों की आंख गढ़ेगी और आंख गड़ने की बात जहाँ पूरी हो गई समझा जाना चाहिए नारीत्व सार्थक हो गया। सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में छिपा कर रखे जाने वाले अङ्गों का प्रदर्शन और इसी आधार पर मिलने वाली ख्याति निस्संदेह नारी के गौरव को गिराती है और उसे अपनी गरिमा खोकर बधिकों के इशारे पर नाचने वाली कठ-पुतली मात्र बनने को विवश करती है।

नारी स्वातन्त्र्य के उगते हुए प्रभात में मानवता ने बड़ी-बड़ी आशाएँ बांधी थीं और यह सोचा गया था कि सभ्यता के प्रकाश में आधी दुनिया को निविड़ बन्धनों से छुटकारा मिलेगा और वह आधी जनसंख्या अपने व्यक्तित्वों का—सद्गुणों का—प्रतिभा का उपयोग सृजनात्मक दिशा में करके इस स्वतन्त्रता की सार्थकता सिद्ध करेगी। पर हो उलटा रहा है। जहां नर के कन्धे से कन्धा मिलाकर लगभग वैसी ही सादा वेष-भूषा में—नारी को कर्तव्य क्षेत्र में उतरना था, अपनी प्रतिभा का समाज को बढ़-चढ़कर अनुदान देना था—और यह सिद्ध करना था कि लिंग भिन्नता से मनुष्य के स्तर में कोई खास अन्तर नहीं आता। मातृत्व के उत्तरदायित्वों को वहन करते हुए भी--परिवार व्यवस्था में विशेष योगदान देते हुए भी नारी अन्ततः मनुष्य ही है और उसमें ऐसी कोई हीनता या दीनता नहीं है जिसके कारण उसे नर को आकर्षित करने की आवश्यकता पड़े। वह अपना वर्चस्व अपनी विकासमान प्रतिभा के आधार पर स्थिर रख सकती है तो शृङ्गारी बनकर प्रकारान्तर से नर के आगे गिड़गिड़ाने और अपने को भोग सामग्री सिद्ध करने की निकृष्टता क्यों सिद्ध करे। यह उसके लिए स्वाभिमान बेचकर प्रकारान्तर से दीन-हीन बनने जैसी बात हो रही है, जिसने नारी स्वातन्त्र्य के साथ जुड़ी हुई सारी आशाओं पर पानी सा फेर दिया है।

नारी की स्वेच्छा पूर्वक उपभोग्या बनने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति में जहां अन्धकार की गहरी कालिमा बढ़ती आ रही है वहां आशा भरी प्रकाश की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक किरण भी इस रूप में उदय हो रही है कि प्रबुद्ध नारी इस खतरे को समझने लगी है और उसने अपने वर्ग को इस गर्त में गिरकर रहने के लिए आगे कदम बढ़ाने जाने से रोका है। अमेरिका में इसी प्रकार का एक 'नारी मुक्ति आन्दोलन' जोर पकड़ रहा है जिसके अनुसार हर नारी को यह समझाया जा रहा है कि वह आकर्षक बनने के लिए लालायित होकर कामुकों के हाथ की कठपुतली न बने और अपने स्वाभिमान को न बेचे। इस आन्दोलन से प्रभावित नारियां सीधी-सादी लगभग पुरुषों के जैसी ही पोषाक पहनती हैं और उस सजधज से दूर रहती हैं जो उन्हें कठपुतली, गुड़िया या कामिनी रमणी के स्तर पर जा खड़ी करती है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दिनों में भारत में जिस तरह विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाती थी उसी तरह इस आन्दोलन के नेतृत्व में भड़कीली पोषाकों तथा टीपटाप की शृंगार सामग्रियों की होली जलाई जाती है। वे नारियां बालों को भी पुरुषों जितना ही बड़ा रखती हैं और उनकी साज सँभाल रखने के झंझट से अपना समय बचाकर अपनी, अपने परिवार तथा अपने देश की प्रगति के लिए ठोस काम करने की बात सोचतीं और उसी में संलग्न होती हैं। इस आन्दोलन की संचालिका हैं—श्रीमती बेट्टी प्राइडन। उनकी विद्वता भरी शोध पूर्ण पुस्तक 'दी फेमीनिन मिस्टीक' ने न केवल सारे अमेरिकी देशों में वरन् योरोप में भी तहलका मचा दिया है और प्रगतिशील नारी ने शृङ्गारिकता के नये पाश बन्धनों से छुटकारा पाने के लिए—अपनी भूल सुधारने के लिये नये साहस के साथ नये ढङ्ग से सोचना और नये कदम उठाना आरम्भ कर दिया है।

भारत में भी इस आन्दोलन को अग्रसर किया जा सकता तो कितना अच्छा होता।

क्र०१८३,प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org